

DPN 7004

सप्तसतिका विधि SAPTA SATIKĀ VIDHI

Title :

Run. No. 7729

Cat. No.

Micro. No.

Subject गन्त / Tāmbhā

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. / नेपाली / निर्देश २६

Size in cms. 24 x 6.7

Folios 3 Lines (in a page) 7

Direction in Nepali

Compl. / Incompl.

Extant folios 1, 4, and 7 only
Chapt. / act / Missing folios 2, 3, 5 & 6.

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 1941

Ruler / place

गगनाय २५
Jagannath Sri

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सप्त सतिका विधि लिखितं ॥ ॥ द्वाप दो यथे सति निमित्ते ३

आवइ पाठ गर्नु ग्रह दोष भया म २ आवत्र पाठ गर्नु वडो उत्पाति (उत्पत्ति) भया
७ आवत्र पाठ गर्नु ॥ ९ ॥ आवत्रिने संपनि हुन्द प्रा॥ संपत्त्या मुचि हुन्द ॥ ११

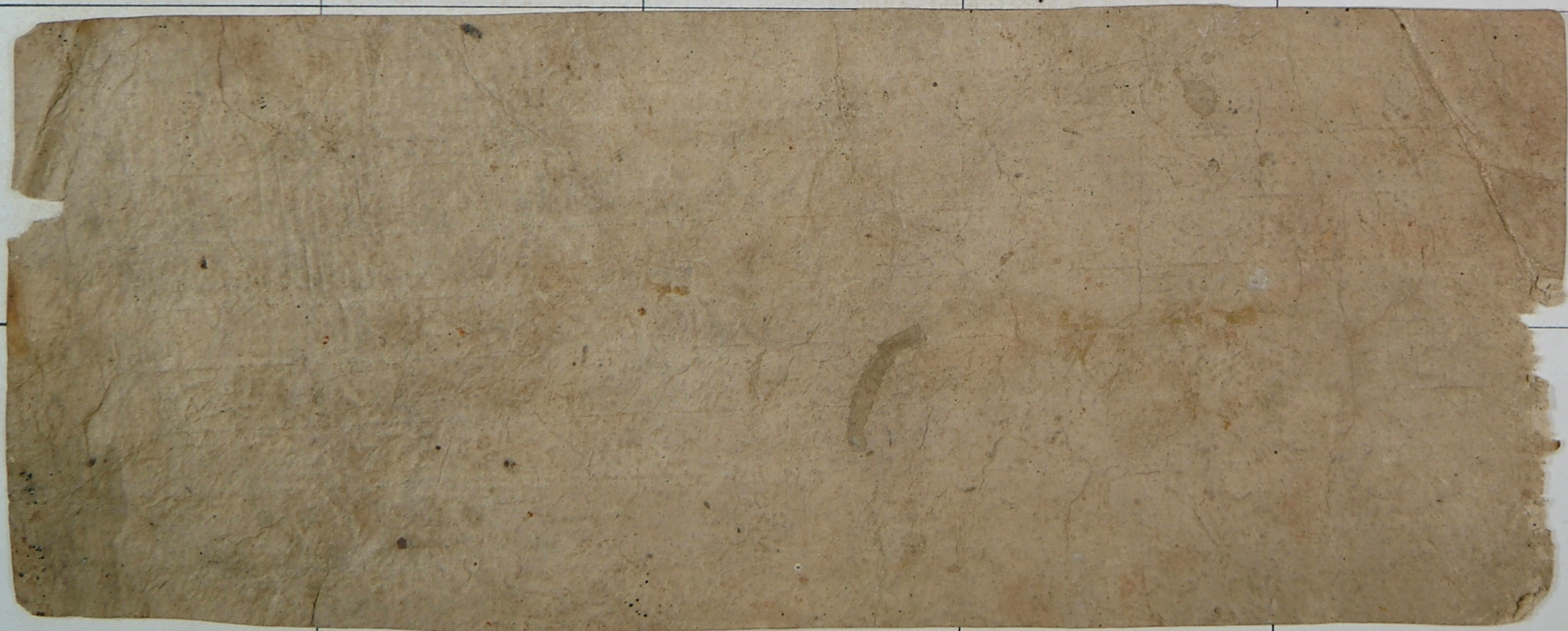
समाप्ति वाक्य / colophon

इति सप्त सप्तिका तन्त्रे संपूर्ण समाप्तं भुक्तं ॥ ~~आदि~~ पुस्तकं दृष्ट्वा गद्गद लिखितं मया ..
... इदं पुस्तकं जगन्नाथ श्री लिखितं साके सम्बत् १९०४१ कार्तिक शुक्ल
वासरे १ शुक्ल ति ॥ कृष्ण ॥ गौरीन्द ॥

टिप्पणी : छ सप्तिका संपूर्ण पुस्तक संपन्न (काल), विजयति संपन्न

रवः वा यक्षीन मयू । संपन्न १९०४१ (१९४१ शुद्ध मासः) कथा
गत । संपन्न ऊरु कथा नः धये ह ।

Remark : The year ७२२ is not clear • साके संपन्न १९०४१
७२२ is mentioned. But the digit is not
distinct 1904/ (1941?) etc.



या ३

मि. घा॥ प्रतिमं वरै वा गृविजले पुटित गरी॥ अथावा से त्पूजा यो श्लोक जप्या विद्या आ
उद्य बो. को बोलने को चतुराई हूँ च साफ वाणि हूँ च॥ सत करि पाट गवा परिा हू
च॥ काम भू अवसे पुटित पाट गर्ज॥ कामानुभवा उसे पाट गर्ज॥ धर्मार्थ काम मो
दे निमित्त प्रीर ले हो म ग्रज॥ मरणा सब को मंग दो म सेता असु ले हो म गर्ज॥ स्तंभ नाम
निमित्त निविरा का फल ले हो म ग्रज॥ मरणा मोहरा उ आट रा वंदि दे दे वा उनम वि
निम ह डर उद्या कामा स ले हो म ग्रज॥ मोहरा कल्पे मरि च ले हि ग ले हो म ग्रज
वेल का करव म धसि म ध्यान त क न वारं मं व ज प र॥ जप का दसां से ले चि शिा दु

जा ४

राम ४

वि. घा॥

असव कल सम हाल न तरका मुखमा हो दे व प्रात म रा ख न प्रतिम को प्रमा रा उ न म ५६ मा
साम ध्ये ८ मा सा अधम ४ मा सा तस्क ल स का भ का रि दियो जगा उ न प्रयोग गर्ज॥ धर्मार्थ का
म मो ले निमित्त पुर्व मुख गर्ज॥ मरणा मोहरा निमित्त दसि न मुख गर्ज॥ उ आट रा वसि करी
नि मत्त उ अ मुख गर्ज॥ इति स प्र सति का त अ सं पुरा सा मा प्रं सु भं॥ या हा शि पुस्त कं दृष्टा ता
हा सि लिखि तं म रा या दि सु धा असु धो वा मा म दोषो न दिये ते ५ जल ह सै ते ना है॥ ह से सित
न वं ध ना र॥ उ र वि ह से न दा त वां से वं वं ध ति पु स्त कं॥ २॥ इति पुस्त कं ज ग ना थ आ लिखि तं
सा के ॥ ३॥ सम्बत् १५०४ ॥ ति क अ क्त १ वा से र ५ अ भ म राम॥ क र ॥ गा दि न्द॥

जा ४

राम ४

रिनसकि-पारोगभयेधुइछ जातरहेछ सवुयइछ धनाकोरवइछ तिनउ
कारकोसानिहइछ सुभइछ पापधुइछ विपतिहराइछ जास्मिष्टाधिहइछ स
जेवइछ १००० आवत्रिने क्षपारक्षार जास्मि आफै आइव सइछ नः